डॉ० संगीता राय
संस्कृत विभाग
एच० डी० जैन कॉलेज, आरा

ध्वनियों का वर्गीकरण :—

ध्वनि-विज्ञान भाषा शास्त्र का महत्वपूर्ण अंग है। किसी भाषा की ध्वनियाँ उसका मूल आधार होती है। क्योंकि ध्वनियों से ही पद तथा पदों से ही वाक्य बनते हैं। ध्वनि विज्ञान में मानव मुख से निःसृत ध्वनियों का सर्वाङ्गीण विवेचन किया जाता है। भारतीय वैयाकरणों ने ध्वनियों का स्वर एवं व्यंजन नामक वर्गीकरण किया है। — 'स्वराः अन्वम् भवति व्यञ्जनमिति' अर्थात् स्वर स्वतन्त्र हैं एवं व्यंजन का उच्चारण सम्भव नही है। महामुनि-पाणिनी ने सम्पूर्ण ध्वनि समूह को 14 सूत्रों में आबद्ध किया। —

1) अइउण्
2) ऋलृक्
3) एओङ्
4) ऐऔच्
5) हयवरट्
6) लण्
7) ञमङणनम्
8) झभञ्
9) घढधष्
10) जबगडदश्
11) खफछठथचटतव्
12) कपय्
13) शषसर्
14) हल्

उपर्युक्त सूत्रों में अन्तिम व्यञ्जन हलन्त अर्थात् स्वरहीन है। इन सूत्रों को आधार बनाकर सम्पूर्ण ध्वनि समूह का ~~14 सूत्र~~ वर्गीकरण किया गया है।

सामान्यतः भारतीय वैयाकरणों ने ध्वनियों का वर्गीकरण -1) स्वर (Vowels) 2) व्यंजन (Consonants) के आधार पर किया जाता है। इनकी परिभाषा क्रमशः इस प्रकार है — " स्वर वह ध्वनि है जिसके उत्पादन में

मुखविवर खुला रहता है जिससे श्वास वायु बिना रुकावट के बाहर निसृत हो जाती है।

व्यंजन वे ध्वनियाँ हैं, जिनके उच्चारण में स्वरयंत्र से बाहर निकलती हुई श्वास वायु, मुख-नासिका के संधिस्थल या मुख-विवर में कहीं न कहीं अवरुद्ध होकर या संघर्षित होकर मुख या नासिका से बाहर निकलती है, अथवा जिसके उत्पादन में श्वासवायु के निःसरण में किसी न किसी प्रकार का गतिरोध पैदा किया जाता है।

ध्वनियों का वर्गीकरण वस्तुतः दो तत्वों पर आधारित है — I) स्थान (II) प्रयत्न

~~I) स्थान~~ — ध्वनि के उच्चारण में ध्वनि यन्त्र के जिन अवयव विशेषों ~~क~~ से सहायता ली जाती है, उन अवयवों को उन ध्वनियों का <u>स्थान</u> कहा जाता है। और ध्वनि यंत्र के विभिन्न अवयवों द्वारा इन ध्वनियों की उत्पत्ति में जो योगदान किया जाता है, उसे <u>प्रयत्न</u> कहा जाता है।

ध्वनियों का स्थान के अनुसार वर्गीकरण निम्न प्रकार से है —

I) कण्ठ्य — अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः अर्थात् अ, आ, क्, ख्, ग्, घ्, ह तथा विसर्ग ये ध्वनियाँ कण्ठ से बोली जाती हैं

II) तालव्य — इचुयशानां तालु: अर्थात् इ, ई, च्, छ्, ज्, झ्, य्, श् का उच्चारणस्थान तालु है।

III) दन्त्य — लृतुलसानां दन्ताः अर्थात् लृ, त्, थ्, द्, ध्, न्, ल्, स् का उच्चारण स्थान दन्त है।

IV) मूर्धन्य — ऋटुरषाणां मूर्धा अर्थात् ऋ, ट्, ठ्, ड्, ढ्, र् तथा ष् का उच्चारण स्थान मूर्धा है।

V) ओष्ठ्य — उपूपध्मानीयानामोष्ठौ अर्थात् उ, प्, फ्, ब्, भ्, म् का उच्चारण स्थान ओष्ठ है

vi) नासिका – ञमङणनानां नासिका अर्थात् अनुनासिक ञ, म, ङ, ण तथा न् ध्वनियों का उच्चारणस्थान नासिका है

vii) कण्ठतालु – ऐदैतोः कण्ठतालु अर्थात् ए, ऐ ध्वनियाँ कण्ठ तालु से बोली जाती है।

viii) कण्ठ ओष्ठ – ओदौतोः कण्ठोष्ठम् अर्थात् ओ & औ कण्ठ एवं ओष्ठ से बोली जाती है।

ix) दन्तौष्ठ्य – वकारस्य दन्तौष्ठ्य अर्थात् व का उच्चारणस्थान दन्त & ओष्ठ है।

—x—